दैनिक भास्कर
रविवार, 25 जुलाई, 2021 नोएडा

आस्था व भव्यता का अद्भुत नमूना

ग्रैंड धार्मिक स्थल : शेख जायद ग्रैंड मस्जिद

गीतांजलि सक्सेना

जीवन का सिक्का चाहे एक ही हो ... लेकिन सिक्के के दो पहलू हमेशा से रहे और चाह कर भी हम इसे नहीं बदल सकते हैं। दुनिया की हर वस्तु, व्यक्ति, घटनाएं हर एक के दो पहलू होते हैं, जो कि जीवन भर हमें इन दो बातें व उन पहलुओं से उत्पन्न स्थिति का आकलन करते रहना सिखाते हैं। जैसे अच्छा बुरा, जिनका प्रभाव भी दो सकारात्मक व नकारात्मक और इनके प्रभाव को विभक्त करते हैं, तो वह भी दो सुख-दुख। दरअसल हम सब ने जिंदगी जीने के अन्दाज को ऐसा ही समझा है, किन्तु कभी-कभी पहलुओं को जानने के लिए सिक्का एक तरफ गिरने की बजाय खड़ा रह जाता है और हम हक्के-बक्के होकर असमंजस की स्थिति में आ जाते हैं। कोविड की दुनिया में कोरोना के बदलते तेवर ने सब को जहां का तहां खड़ा कर दिया है और समझने को बाध्य कर रहा है कि हम हैं क्या - पूरा एक सिक्का, या उसका एक पहलू या बस खड़े रह गये हैं।

आज समय की सच्चाई बस इतनी है कि इन हालातों में वर्तमान परिस्थितियों में महामारी के तीसरे वैरिएंट के आने के खौफ को देखते हुए हमें सतर्क रहना होगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि हम सभी ने गत वर्षों में हर तीज त्योहारों और विभिन्न अवसर व मौकों को मनाने के अन्दाज को नये स्वरूपों के साथ स्वीकार किया है। किन्तु मनुष्य प्रवृत्ति है कि थोड़ी सी भी आजादी मिल जाए, तो स्थिति का दुरुपयोग करते हुए मनमानी करने में कामयाब हो जाता है। हाल में ही कोविड में ढिलाई के बाद की तस्वीरें बेहद चिन्ता का सबब इसलिए भी हैं क्योंकि एक ओर हम इस विश्वव्यापी लड़ाई में शामिल होने के लिए वचनबद्ध हैं, तो दूसरी ओर इस संघर्ष को कमजोर कर रहे हैं। सभी का दिल चाहता है कि खुल जा सिम-सिम जादू के पिटारे से भूले बिसरे उन अच्छे दिनों के अनुभवों की सुखद अनुभूति का अहसास पुनः कर पाएं, जो कोविड के चलते सिर्फ यादों में बसी हुई है। महामारी की साया में त्योहारों की रंगत फीकी नजर आ रही है। यही नहीं, बाजार अगर खुले भी, तो खरीददारों में हर्षोल्लास का अभाव देखा जा सकता है। हमें अभी सब्र रखना है, क्योंकि बाजारों और शहरों में सुरक्षित चहल-पहल, उत्सवों की रंगत फिर घर लौटेगी।

दुनिया भर में मुस्लिम आबादी देशों में मनाने वाले सबसे बड़ा त्योहार ईद पर भी पिछले दो साल से कोविड पाबंदी का असर देखा जा सकता है। सभी उपासकों को कोविड सुरक्षा के सख्त उपाय के रूप में घरों में ही नमाज अता करने की हिदायत दी गई। यही नहीं, इनके पारंपरिक रिवाज प्रार्थना के बाद हाथ मिलाने और गले मिलने पर भी निषिद्ध रहा। सभी से मानवीय गुजारिश है कि संयमी बनें तभी आस्था और विश्वास के साथ मिलकर इस युद्ध में फतह हासिल होगी।

संयुक्त अरब अमीरात में हाल में गई

ईद उल-अजहा (बकरीद) पर इबादत के लिए सभी मस्जिदों में नमाजियोंको सख्त प्रोटोकॉल के अन्तर्गत सीमित संख्या में कुछ मिनटों के लिए नमाज अता करने लिए अनुमति दी गयी। यहां तक कि घरों में भी सिर्फ कुछ ही लोगों को दावतें खाने का अवसर मिल पाया। मौके की नजाकत को देखते हुए अपने को समझाने के अलावा कोई चारा नहीं था।

दुनियाभर में फैले कई धर्म के लोग रहते हैं। सबों ने अपनी-अपनी आस्थाओं के मुताबिक कई मंदिर, चर्च, गुरुद्वारे व मस्जिदें बनाए हुए हैं। इनमें से कई धार्मिक स्थल अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं, जोकि न केवल उस देश के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व को रखती हैं, बल्कि प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के नामचीन नामों की लिस्ट में भी दर्ज हैं। जिनकी सुन्दरता किसी का भी मन मोह लिया करती है।

यहां फिर याद दिलाते हुए कि पर्यटन उद्योग पर भी कोविड की वजह से आर्थिक क्षति हुई है। दुनिया की अनेकों भव्य इमारतें, वादियों, मन्दिरों व मस्जिदों आदि टूरिस्ट स्थलों का दीदार करने के अवसर सीमित होते लग रहे हैं। तो दूसरी ओर अन्तरिक्ष की सैर के दरवाजे खुलने का डंका बज रहा है, जबकि एक साधारण व्यक्ति का जमीनी हकीकत से आमना सामना की तस्वीर बिल्कुल अलग रहती है।

आधुनिक तकनीकों से लैस इस दुनिया में आज यादगार बनी तस्वीरें या चित्रों को दिखाने वाला एक अजूबा यंत्र बाइस्कोप को याद करने का दिल चाहा। उसे माध्यम बना कर लेख समर्पित करने के प्रयास से हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी, बेहद सुन्दर मस्जिद शेख जायद ग्रैंड मस्जिद की सैर करेंगे।

विश्व भर में प्रसिद्ध आबू धाबी में स्थित यह मस्जिद यूएई के स्वर्गीय राष्ट्रपति शेख जायद बिन सुल्तान अल नाहयान की कल्पना को साकार करने में ब्रिटिश डिजाइनर्स ने अन्य देशों के कलाकारों सहित इस रचनात्मक परियोजना को वर्ष 1996 में शुरू किया था, जिसे 2007 में पूरा कर के एक अद्भुत कलाकृति के रूप में बेजोड़ नमूना पेश किया गया है। सफेद संगमरमर से बनी शानदार मस्जिद आधुनिक इस्लामी वास्तुकला का जीवंत संदर्भ ... जो अतीत को वर्तमान से जोड़ता हुआ दर्शाता है।

इस्लामी मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हुई, यह मस्जिद न केवल मुस्लिम अनुयायियों का धार्मिक स्थल है, बल्कि इस शाही और विशाल मस्जिद को देखने दुनिया भर से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यही नहीं, इस मस्जिद को दुनिया के चर्चित व पसंदीदा लैंडमार्क के रूप में स्थान प्राप्त है।

इस्लामी आस्था का महत्वपूर्ण स्थानों में सऊदी अरब की मक्का और मदीना मस्जिदों के बाद शेख जायद ग्रैंड मस्जिद को तीसरी सबसे विशाल मस्जिद का दर्जा प्राप्त है। मस्जिद अपनी विशालता का परिचय देते हुए दर्ज रिकार्ड 40 हजार लोग एकसाथ नमाज अता कर सकने को प्रमाणित करता है।

पूरी तरह से वातानुकूलित मस्जिद के मुख्य हॉल के अन्दर ही एक बार में 7000 लोगों के एक साथ नमाज अता करने की व्यवस्था है। इसी मुख्य हॉल में दमदमाते 9 टन का झूमर मस्जिद की खूबसूरती में चार चांद लगाता है। इससे जुड़े कुछ दिलचस्प तथ्य यह हैं कि मस्जिद में लगे झूमर जर्मनी से लाये गये हैं, जिनमें लाखों की मात्रा में क्रिस्टल (स्वरोस्की) का प्रयोग किया गया है। लगे क्रिस्टलों को इटली की कंपनी ने सजाया है। यह सब कुछ अपने आप में खास व बेहद खूबसूरत है।

लगभग 12 एकड़ की भूमि में फैली मस्जिद को बनाने के पीछे ... दुनियाभर में फैली इस्लामिक मान्यताओं, रीति-रिवाज दुनिया के कलाकारों को एक स्थान पर लाना विविधता में एकता को दर्शाता है। इसके निर्माण कार्य में विश्व भर के अनेकों देशों मोरक्को, मलेशिया, चीन ईरान ब्रिटेन और ग्रीस के कारीगरों का योगदान रहा। भारत भी अछूता नहीं रहा ... राजस्थान के मकराना के मार्बल का उपयोग किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यूएई यात्रा के दौरान मस्जिद की खूबसूरती का अनुभव किया था। मस्जिद के प्रांगण में जिधर नजर घुमाये अद्भुत कारीगरी की तस्वीरें उजागर होती है। मस्जिद के भव्य गुम्बदों पर गोल्ड कोटिंग नक्काशी देखते बनती है। इन गुंबदों की लम्बाई 32 मीटर और ऊंचाई 75 मीटर है। मस्जिद की दीवारों और खम्भों पर कलात्मक लिपि (कैलीग्राफी) से सुलेख किया गया है।

मस्जिद अपनी विशालता को प्रमाणित करते हुए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड में दर्ज कई रिकॉर्ड में सबसे महत्वपूर्ण सबसे बड़ा हाथ से बुना हुआ कालीन है... जिसका सिंगल पीस कालीन 6,000 वर्ग मीटर है। इसकी विशेषता ईरानी महिलाओं की कड़ी मेहनत में छुपी हुई है जिसे उन्होंने दो साल दिन-रात की मेहनत से बुना।

मस्जिद के अविश्वसनीय तत्वों की तस्वीर पेश करने में कुछ हद तक कामयाब रही। इस्लामी आस्था का बेजोड़ कलात्मक कृति का धार्मिक स्थल दर्शनीय है।